International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 59-62

आदिवासी लोक साहित्य का सांस्कृतिक परिवर्तन और जागरूकता का अध्ययन

डॉ० सुनीता सिंह मरकाम
पी–एच.डी. (हिन्दी), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
आदिवासी समाज के पास समृद्धशाली इतिहास है जिससे वह अनभिज्ञ है वीरों, महावीरों शहीदों, क्रान्तिकारियों और राजो–महाराजों से लेकर अनेकाने क्षेत्रों में पारंगत व विद्वान रह आदिवासियों का इतना विस्तृत अध्ययन देश के कोने–कोने में विद्यमान है जिसे सार्वजनिक किये जाने की आवश्यकता है। यह गौरवपूर्ण इतिहास भारतीय आदिवासी समाज को गौरवान्वित करने के लिए पर्याप्त है आदिवासी समाज अभी भी आश्रित साधनों, संसाधनों पर खड़ा दिखाई देता है, जबकि आत्मनिर्भरता के साथ सामाजिक संसाधन पैदा करने की सबसे बड़ी जरूरत है अपने गौरवशाली इतिहास को विस्तृत कर उनकी जय जयकार करना जिन्होंने कुछ छीनकर, लूटकर न सिर्फ जंगलों, पहाड़ों व कंदराओं में निर्वाश्रित जीवन व्यतीत करने को बाध्य किया। यह मूर्खता पूर्ण कृत्य इसलिए हो रहा क्योंकि हम जानते नहीं है और आदिवासियों का यह बड़ा दुर्भाग्य है कि वह जानना भी नही चाहता है।
बाबा साहब अम्बेडकर ने कहा था कि ''गुलामों को गुलामी का अहसास करा दो, वह गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ देगा।''
सर्वश्रेष्ठ संस्कृति से बंधे होने के बावजूद देश की ये जनजातियाँ अशिक्षा, अजागरूकता, क्षेत्रियता व जातीय–उपजातीय विभाजन के कारण गर्व और गौरव दोनों से वंचित है लाख कोशिशों के बाद भी आदिवासी समाज समुद्र का स्वरूप धारण नहीं कर पाया है।
आज आदिवासी समाज प्रगति के पथ पर धीरे–धीरे अग्रसर हो रहा है लेकिन जिस गति से समाज की उन्नति होना चाहिए उससे वह कोसों दूर है। अशिक्षित समाज होने के कारण जागरूकता का अभाव है जो शिक्षित हैं उनमें से चंद लोग ही जागरूकता की श्रेणी में आते हैं।
जब–जब समय का चक्र अपनी परिधि में पुनः नये सिरे से घूमता है, तब–तब मानव में एक नये उत्साह का संचार होता है। कई तमन्नाएँ जागृत होतीं हैं। कई संकल्प लेने के लिए मन आतुर होता है क्योंकि समय अब एक नई पहचान लेकर आया है और स्वाभाविक है कि नई शुरूआत पूरे जोशो–खरोश के साथ होती है। समय परिवर्तनीय है इसका अर्थ समय सदैव बदलता रहता है। कभी एक सा नहीं होता और न ही कहीं ठहरता है। समय का चक्र सदैव गतिमान ही रहता है।

मूल शब्द : आदिवासी, लोक साहित्य, सांस्कृतिक, जागरुकता।

प्रस्तावना
मध्यप्रदेश के उत्तरी पूर्वी अंचल में स्थित सीधी जिला उत्तर प्रदेश की सीमा से लगा हुआ है। दुर्गम पर्वत मालाओं एवं गहन वनों से आच्छादित प्रकृति की स्वर्णिम रश्मियॉ बिखेर रहा है। यह अंचल अपने अन्तर में बहुमूल्य पुरा सम्पदा समेटे हुए है।
सीधी अंचल में गोड़ों की तीन राजधानियॉ थी (1) गोर्गी (2) माड़ा (3) कठौली। इन तीनों राजधानियों में अलग–अलग गोंड राजाओं का राज्य था। कहा जाता है कि व्याघ्रदेव बघेल के वंशज ने विशेषर सिंह नामक गोंड राजा को पराजित कर चुरहट में अपनी राजधानी बनाया।[1] बघेलवंशी शासन काल में इस क्षेत्र के आदिवासियों की दशा बदतर होती गई। उन्होंने मैदानी भाग छोड़कर जंगली भूमि में शरण ली। आज भी इनकी बहुतायत संख्या सीधी के पूर्वी एवं दक्षिणी भाग पर ही अधिक मिलती है। देवसर, बरिगवॉ, मझौली, कुशमी, चितरंगी एवं सिंगरौली क्षेत्र में आदिवासी जाति के लोग बहुतायत में पाये जाते हैं। राजतंत्र की निर्मम जंजीरों ने इनकी बेतहासा खिंचाई की, फलस्वरूप इन आदिवासी जातियों का जीवन राजघरानों के नियंत्रण से दूर वन–वासी बन गया। जहॉ उन्हें स्वच्छन्दता मिली, अपने रंग, उमंग और तरंग में ये जातियॉ अपना पृथक अस्तित्व लेकर आज भी आदिवासी संज्ञा से अभिहित हो रही है।[2]
राजशाही अंतराल में आदिवासी जातियों का जन–जीवन असामान्य हो गया था और उनका विकास समुचित ढंग से नहीं हो पाया। स्वतंत्र्योत्तर काल में आदिवासियों ने नियमानुसार काफी सुविधाएँ अर्जित की। उनके रहन–सहन एवं उद्योग धन्धे, नौकरी तथा शैक्षणिक गतिविधियों में बहुत कुछ सुविधाएँ प्रदान की गई। आज आदिवासी जाति के लोग अनेक महत्वपूर्ण पदों को प्राप्त कर रहे हैं। देश एवं राजनीति की कुर्सी पर भी इनका अधिकार हो रहा है। आज के बदलते परिवेश में वे अपना अधिकार समझने लगे हैं। गांवों में आदिवासी छात्रावास व अन्य सुविधाएँ पहुंच जाने से साक्षरता का प्रतिशत बढ़ रहा है। लेकिन आधुनिकता की चकाचौंध से ये अपने मन एवं मस्तिष्क में धीरे–धीरे ये बात घर कर गई है कि हमारी भाषा संस्कृति ही हमारी प्रगति में अवरोध उत्पन्न कर रही है। जिसके फलस्वरूप युगीन अन्धानुकरण के कारण अपनी अमूल्य भाषा संस्कृति को त्यागकर नवीनता की ओर बढ़ रहे हैं। आदिवासियों का धार्मिक जीवन और उनकी सांस्कृतिक परम्परा अन्य जातियों से भिन्न है।
प्रागैतिहासिक काल से ही मध्य भारत के सतपुड़ा पर्वतीय श्रृंखलाओं के परिक्षेत्र में नागवंशीय गोंड राजाओं का राज्य था। गोंड समाज के लोगों का योगी राजा संभूशेक (महादेव) स्वयं नागवंशीय गोंड था। गोंडी धर्म दर्शन के अनुसार सतपुड़ा पर्वतीय श्रृंखलाओं में स्थित नर्वाकोट गणराज्य के नागवंशीय गोंड राजा ढोलापुयार की कन्या हिरबा माता गोड़ी धर्म गुरु पहांदी पारी कुपार लिंगों की माता थी, जो पुरवाकोट गणराज्य के पुलशीव राजा को बियाही गई थी। प्राचीनकाल से ही नागवंशीय गोंडों का बाहुल्य इस परिक्षेत्र में रहा। इस तरह प्राचीन काल से ही नागवंशीय गोंडों का बाहुल्य इस परिक्षेत्र में रहा है।

सांस्कृतिक परिवर्तन और जागरुकता

आदिवासी समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया को मानव इतिहास के अनवरत परिवर्तन और हमारी वर्तमान राष्ट्रीय सामाजिक आर्थिक व्यवस्था में गतिशील संरचनात्मक परिवर्तन के संदर्भ में ही सही अर्थ में समझा जा सकता है।

संस्कृति व्यक्ति और समाज दोनों से सम्बन्ध रखती है संस्कृति के माध्यम से जीवन के वैशिष्ठय अर्थात् समाज की आत्मा की अभिव्यक्ति होती है। समाज का अपना एक अलग अस्तित्व है किन्तु यह भी उतना ही सत्य है कि जब समाज क्रियाशील होता है या होना चाहता है तो उसे अपनी भावनाओं के प्रकटीकरण हेतु व्यक्तियों का सहारा लेना पड़ता है संस्कृति मूलतः समाजस्थ होते हुए भी उसका सम्बन्ध व्यक्ति से आये बिना नहीं रह सकता। आदिवासी समाज के लिए सुरक्षा एवं विशेष व्यवस्था की बात संदर्भ से काटकर कभी–कभी आदिवासी रू‍प में प्रस्तुत की जाती है आदिवासी समाज बड़ा स्वाभिमानी होता है, उसके सदस्य उच्च कौशल से युक्त होते हैं और ये कौशल उनकी अपनी सामाजिक, आर्थिक, स्थिति में सार्थक होते हैं।

प्रकृति के पुजारी भारत के मूल निवासी आदिवासियों ने अपने धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक परम्पराओं को स्थायित्व प्रदान करते हुए संभवतया भारत में पहली बार विशाल व भव्य शक्ति पीठ का सृजन किया है। भिन्न–भिन्न जातियों में बिखरे तथा असंगठित इन अनुसूचित जनजातियों में कोई समरसता है तो वह उनकी संस्कृति परम्पराएँ व मान्यताओं में निहित है जो इन्हें आपस में जोड़ती हैं।

मध्यप्रदेश शासन की जनहित योजना के अंतर्गत कन्या दान (सामूहिक विवाह) कार्यक्रम में विशेष कर गरीब व कमजोर वर्ग के परिवारों को बड़ी राहत मिली है। सामूहिक विवाह आज की आवश्यकता है अतः आम जन मानस ने शासन की इस योजना को सहर्ष स्वीकार्य कर विवाह योग्य कन्याओं का इस योजनांतर्गत विवाह कराया और करा रहे हैं शासन द्वारा कराये जा रहे सामूहिक विवाह के वैवाहिक संस्कार हिन्दू रीति रिवाजों के अनुरूप ब्राह्मण, पंडित, पुरोहितों द्वारा संपन्न होते हैं चूँकि आदिवासी समाज हिन्दू नहीं है तथा इस समाज की लगभग सभी जनजातियों में अपने–अपने वैवाहिक संस्कार, परम्पराएँ एवं पुजारी होते हैं जिनके माध्यम से ये समस्त जनजातियों जातियानुसार कुल देवता, कुल देवी तथा इस्ट को आव्हान कर विवाह कार्यक्रम सम्पन्न करते हैं जिसकी वजह से आदिवासी समाज में भारी रोष देखा जा रहा है।[3]

मध्यप्रदेश मूलतः एक आदिवासी बहुल्य होंने के साथ–साथ गोंडवाना साम्राज्य का संस्थापक व शासक क्षेत्र रहा है। यहाँ की मूल जनजातियों में गोंड, भील, कोल, बैगा इत्यादि प्रमुख हैं। गोंड और भील राज्य की प्रमुख जनजाति है जिनके अपने धार्मिक पर्व, प्राकृतिक अनुष्ठान एवं भिन्न सांस्कृतिक परम्पराएँ हैं। राम, कृष्ण, ब्रम्हा, विष्णु, इन्द्र, गायत्री, सरस्वती, लक्ष्मी आदि हिन्दू देवी–देवताओं की पूजा आदिवासी परम्परा में नहीं है।

शाासकीय कन्यादान कार्यक्रम में गोंड, भील, कोल, बैगा, कवर, उरांव आदि जनजातियों के विधि–विधान के अनुरूप शादी कराई जाय। मूल निवासी आदिवासियों के धार्मिक, सांस्कृतिक परम्पराएँ व रीति–रिवाजों में किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप को गैर कानूनी घोषित करता है। आज आदिवासी रीति–रिवाजों में परिवर्तन हो रहा है। अपने देवी–देवताओं और अपनी संस्कृति को अपनाने लगा है।

एक ऐसी लोक मान्यता है कि बस्तर का मूल आदिवासी माड़िया और मुरिया बोलता नहीं, इसलिए उसकी संस्कृति भी नहीं बोलेगी लेकिन संस्कृति सदियों से बोलती आ रही है। बस्तर का आदिवासी अपनी लंगोटी, तुम्बा, कांवड और कुल्हाड़ी के प्रति जितना जिम्मेदार है उतना शहरी आदमी नहीं। अपनी आदिम सभ्यता के प्रति भी बस्तर का मुरिया बेहद वफादार होता है। शहरी सभ्यता से जुड़ना पैसों के प्रति मोहर संचित करना या जिन्दगी में आद्योपान्त बदलाव को आज भी पसन्द नहीं करता है। इनकी पवित्रता का क्या महत्व है यह तो किसी आदिवासी से पूछकर ही पता चल सकता है। उसके देवी–देवता के लिए माता गुड़ी या देव गुड़ी ही काफी होती हैं वह नहीं चाहता कि इनके लिए कोई भव्य मंदिर बने। बाहरी लोग या आदिवासी ही इनकी पवित्रता नष्ट नहीं कर दे इसलिए वे सदैव जागरूक रहते हैं। आदिवासी क्षेत्रों में देवी–देवताओं के मंदिर या देवी गुड़ी प्रायः गाँवों के बाहर ही बनाना पसन्द करते हैं या फिर जंगल में देवता के नाम पर समारोह या पूजा–अर्चना के दिन भी इनके लिहाज से वर्ष में एक या दो बार ही आते हैं।[3]

आदिवासी देवी–देवताओं के नाम लोक मान्यता और लोक विश्वास की परम्परा सदियों पुरानी है। पूजा के प्रकार भी बेहद रोचक और ठेठ आदिम है। किसी देवता की पूजा किस कामना से और कब करना है इसके निश्चित नियम ही है। यह भी निर्धारित है कि कौन देवी–देवता किस कामना को पूरा करता है।

धार्मिक संस्कारों में देवी–देवताओं के वंशज या परिवारों का विस्तार होता आ रहा है जो सांस्कृतिक परिवर्तन है। गोदना का प्रचलन आदिवासियों में प्राचीन काल से चली आ रही है। लगभग सभी जनजातियों में एवं अनेक ग्रामीण कृषक जातियों में व्यापक रूप से विद्यमान है। सरगुजा, मण्डला, विलासपुर की अगरिया आदिवासी स्त्रियाँ अपनी बाँहों, भुजाओं तथा पिडलियों, जंघाओं पर बहुत अधिक गोदने गुदवाती हैं।[4]

वर्तमान समय में शहरों के समीप वाले क्षेत्रों में एवं पाठशाला में अध्ययन करने के लिए जाने वाली लड़कियों में गोदना गुदवाने के प्रति उदासीनता दिखाई पड़ने लगती है या उनके द्वारा विरोध किया जाने लगा है। कुछ लड़कियों द्वारा बहुत अधिक गोदने न गुदवा कर कुछ नाम मात्र के अभिप्रायों को औपचारिकता पूरी करने के लिए ही अंकित करवा लिया जाता है। कई बार विवाह के अवसर पर ससुराल पक्ष के विशेष आग्रह पर कन्या को गोदना अभिप्राय गुदवाने पड़ते हैं क्योंकि वे सौभाग्य एवं मातृत्व के प्रतीकों के रूप में अनिवार्य समझे जाते हैं। यद्यपि नई पीढ़ी के लोग उसे रूढ़िवश ही अंकित करवाने पर जोर देते हैं।[5]

आजादी के पश्चात् सबसे बुरी हालत जिस समाज की हुई वह आदिवासी समाज है। जिसे सभी ने अपने–अपने स्वार्थों के लिए बलि का बकरा बनाया। किसी ने बोट हथियाने के लिए एवं किसी ने धन–दौलत व उनको गुलाम बनाकर अपनी दासता में रखने के लिए उन पर अनेक प्रकार से षड्यंत्रकारी साजिश अपनाकर उनका शोषण–दोहन किया।

यह समाज शिक्षा से कोसों दूर होने के कारण अज्ञानतावश अपनी बबार्दी का तमाशा खड़ा–खड़ा ही देखता रहा। उसके पतन के कारणों में एक मुख्य कारण उसके समाज का प्रतिनिधि योग्य न होना भी है। यदि डॉ0 अम्बेडकर महार समाज में नहीं होते तो शायद उस समाज की हालत आदिवासियों से भी ज्यादा खराब होती।

इसलिए योग्य नेतृत्व अत्यंत आवश्यक है जो सही दिशा–निर्देश करे, जो वह मार्ग बताये जिस पर चलकर समाज का विकास हो सके व उसके स्वाभिमान व अस्तित्व की रक्षा हो सके। धीरे–धीरे आदिवासी समाज में जागृति की किरण फैलती नजर आ रही है। आदिवासी युवा–युवती अपने समाज के प्रति सजग दिखाई दे रहे। उनमें अपने समाज के बारे में जानने की जिज्ञासा इस बात का संकेत है कि आदिवासी समाज का भविष्य उज्जवल है क्योंकि

जिस समाज की एक पीढ़ी भी समाज केविकास में अब ज्यादा देर नहीं लेकिन यहाँ भी सही दिशा–निर्देश का प्रश्न फिर सामने खड़ा हो रहा है। इन्हें एक ऐसे ही नेतृत्व की आवश्यकता है जो सम्पूर्ण आदिवासी समाज के पुनरूथान में एक अहम भूमिका अदा करे।

आज आवश्यकता ही नहीं बल्कि एक अहम जरूरत है कि समाज के विकास के लिए आगे आयें क्योंकि सांस्कृतिक परिवर्तन किसी एक के प्रयत्नों से संभव नहीं। यह एक के विकास का मसला नहीं बल्कि सामूहिक विकास का मुद्दा है। इसके लिए जरूरी है कि सामूहिक प्रयत्न हो, जिसके फलस्वरूप सम्पूर्ण समाज का विकास हो सके।

समाज के विकास में पुरूषों के अलावा महिलाओं की अहम भूमिका भी है क्योंकि वे ही अप्रत्यक्ष रूप से समस्त कार्यों का संचालन अपने हाथों में रखतीं हैं। इसलिए कहा जाता है कि किसी घर का विकास किसी कुल का विकास या किसी समाज का विकास नारी के बगैर असम्भव है। इसलिए समाज के विकास कार्यों में सामाजिक महिलाएँ आगे आकर बढ़–चढ़कर भाग ले। इससे सामाजिक विकास में अभूतपूर्व गति आयेगी और समाज बहुत जल्द विकास की चरम सीमा को पा सकेगा। अक्सर देखा जाता है कि जब भी सामाजिक विकास की बात आती है तो ज्यादातर लोग इसके लिए एक–दूसरे को दोषी ठहराते हैं और एक–दूसरे पर इसका भार डालने की कोशिश करते हैं जो बिल्कुल गलत है क्योंकि यदि हम स्वयं जिस दिन समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को जान लेंगें उस समय हमें इस बात की आत्मग्लानि हो कि हम समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को पूर्ण नहीं कर पा रहे हैं।[6]

परिवर्तन संसार का नियम है जो कल था वह आज नहीं और जो आज है वह कल नहीं। इसी सिद्धान्त से सम्पूर्ण जगत में क्रियाएँ होती रहतीं है। मूलनिवासी कहलाने वाला आदिवासी समाज धीरे–धीरे उठने वाला ज्यादा देर तक खड़ा रह सकता है इसलिए जो समाज में भूत में हजारों सालों तक समृद्धशाली रहा, वह पुनः कई हजार सालों तक भविष्य में राज करेगा। अब परिवर्तन का समय आ गया है कई नई आशा की किरण समाज के नौजवानों में दिखाई दे रहीं हैं जो परिवर्तन की एक नई सुबह को अंकित कर रही हैं।

मध्यप्रदेश में सर्वाधिक आदिवासी मण्डला जिला में हैं। मण्डला में सर्वाधिक गोंड आदिवासी हैं। गोंड़ों का प्राचीन इतिहास गौरवमय रहा है उनका जनजीवन भी गौरवमय है। अति प्राचीनकाल में गोंडवाना राज्य था, गोंडवाना साम्राज्य का शासक शंभू शेक सर्वविदित है। भारत के मध्य में गोंडवाना राज्य फैला हुआ था।सतपुड़ा पर्वतीय श्रृंखलाओं के परिक्षेत्र में शंभू शेक का ठाना (अखाड़ा) है। उस समय गणराज्यों में नर्वाकोट प्रमुख गणराज्य माना जाता था। कई राजाओं ने यहॉ राज्य किया जिसमें से संग्राम शाह, दुर्गावती, शंकरशाह, वीरनारायण शाह, अवंतीबाई आदि।

गोंडवाना राज्य में गोंडवंशीय राजा, संग्राम शाह बहुत ही पराक्रमी एवं महान शासक थे। उनके अधीन 52 गढ़ और 57 परगना थे। उनके शासन काल को गोंडवाना का स्वर्ण युग कहा गया है। वे अत्यन्त ही लोकप्रिय एवं जन हितैषी शासक थे। जनता उन्हें हमेशा नमन करती थी। आज भी गोंडवाने में संग्राम शाह का नाम गर्व से लिया जाता है।

श्री संग्रामशाह गढ़ वावन। सह परगना रहे सत्तावन।।
जन प्रिय नृप नावहि सब माथा। शासन काल है स्वर्णिम गाथा।।[7]

अतीत काल में गोंडवाना साम्राज्य का राजनीति में बहुत प्रभाव था। सबसे सम्पन्न और शक्तिशाली राज्यों में गोंडवाना राज्यों की गिनती होती थी। इनके दुर्ग, किला अत्यन्त ही सुन्दर मजबूत एवं भव्यता लिए वास्तुकला से परिपूर्ण आकर्षण का केन्द्र था। आज वही किला बावली अव्यवस्था के कारण खण्डहर रूप धारण कर चुके।

सीधी जिले में कोल जाति के राजाओं ने भी राज्य किया और उनका राजकाल सम्पन्न राज्य कहा जाता था लेकिन क्षत्रियों के आक्रमण करने और उनके राज्य को आने में मिला लेने के कारण उनकी स्थिति दयनीय हो गई है। जिस वजह से आज वो गुलामी करने और मजदूरी करने को मजबूर हो गए हैं।

गोंड़ राजाओं की कमियों एवं दुर्बलता को एहसास करते हुए गोंडवाने पर कलचुरियें ने उचित समय पाकर आक्रमण किया। जब गोंडवाना राज्य में दुर्गावती शसन कर रही थी, राज्य सम्पन्न और शक्तिशाली राज्यों में गिनती होती थी। उसी समय मुगल शासक अकबर का शासन था। उससे गढ़ा मण्डला की सम्पन्नता देखी नहीं गयी और उसने मण्डला पर विशाल सेना के साथ हमला किया और लूट पाट किया। इस युद्ध में दुर्गावती की पराजय हुई और वीरगति को प्राप्त हुईं।

तभी से गोंडवाना राज्य का प्रभाव धीरे–धीरे घटने लगा। अतीत काल में गोंडवाना साम्राज्य के ऐतिहासिक दुर्ग, किला, अत्यन्त ही सुन्दर मजबूत एवं भव्यता लिए वस्तुकला से परिपूर्ण आकर्षण का केन्द्र था। आज वही किला, बावली, अव्यवस्था के कारण खण्डहर रूप धारण कर चुके हैं। आज राजनैतिक दृष्टि से प्रभाव कम हो गया है।

निष्कर्ष

आदिवासी समाज अपने रीति–रिवाज संस्कृति संस्कार धर्म मान्यतायें (टोटम एवं टेबू) उत्सव, नृत्य, वाद्य जैसी प्रथाओं से ओत–प्रोत है उनके धर्म दर्शन रीति–रिवज उत्सव आदि सभी उससे ओत–प्रोत हैं। चाहे व्यक्ति का नाम हो अथवा कुल समूह गोत्र समूह या फिर टोटम हो या टेबू हो, उत्सव हो या गुदना बाद आदिवासियों के बीच किसी वृक्ष कोई पशु, कोई पक्षी, कोई वन या पहाड़ अवश्य पायेंगें। जिससे स्पष्ट है कि जनजाति के लिए प्रकृति अपरिहार्य है। तथा वे प्रकृति के सच्चे सपूत और प्रकृति की पूजा करते हैं उनके तीज, त्योहार प्रकृति से ही जुड़े रहते हैं और वे प्रकृति से अलग होने की कल्पना भी नहीं कर सकते।[8]

आदिवासी जनजीवन के प्राण उनके लोक साहित्य में बसते हैं। आदिवासी जनजाति चिरकाल से प्रकृति के साथ घुल–मिलकर भूख, अभाव एवं संघर्ष में भी हरे–भरे हैं। इसकी वजह उनका लोक जीवन शैली एवं लोक साहित्य ही है जो उनके जीवन को संचारित करता है। उनके संस्कृति, समाज एवं लोक साहित्य में अद्भुत समरूपता एवं रागात्मकता है, जो विकसित समाज एवं संस्कृति से सर्वथा पृथक है।

जनजातीय लोग कठिन परिस्थितियों में अपना जीवन यापन करते हैं। आदिवासी समाज सरल प्रकार के समाज है और यह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रमुखतः प्रकृति पर निर्भर रहते हैं। आदिवासी समाज आज जिन विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है। उसके मुख्य कारणों में शिक्षा का अभाव और आत्म सम्मान में गिरावट है। आर्थिक समस्या व ज्ञान का अभाव सदैव आत्म सम्मान को ठेस पहुंचाता है। आदिवासी समाज आत्म सम्मान खोकर आज जीवन यापन करने के लिए मजबूर है। क्योंकि अज्ञानता का अंधकार उनके जीवन में सदैव काली छाया बनकर छाया रहता है जिससे उनका मनोबल क्षीण हो जाता है और वह अप्रत्यक्षित भय में स्वयं को बंधा हुआ महसूस करते हैं।

ऐसे में आदिवासी समाज का संघर्ष पूर्ण जीवन जीना व आत्मसम्मान के बगैर जीना पशु तुल्य नजर आता है, लेकिन अब

यह परिस्थितियॉ बदलनी होगी। स्वयं में आत्म सम्मान व भुजाओं में साहस लाना होगा। इसके लिए जरूरत है एक बार अन्याय का विरोध करने की व आत्म विश्वास को जगाने की। जिसे जल्द ही आदिवासी समाज को छोड़ना होगा तभी वह अपने खोये हुए आत्म सम्मान को प्राप्त कर सकते है।

सन्दर्भ

1. आदिवासी सत्ता–पृष्ठ क्र0 8 नवम्बर–दिसम्बर, 2012
2. बालकृष्ण राव : मध्यप्रदेश–छत्तीसगढ़ पर्यटन पेज 61, अजय प्रकाशन चौड़ा रास्ता जयपुर – 3
3. सुरसरि प्रसाद मिश्र : सीधी जिले का आदिवासी लोक साहित्य पेज नं0 16
4. आदिवासी सत्ता मासिक पत्रिका जून 1011 सम्पादक–के0आर0 शाह।
5. गोंडवाना किरण, साप्ताहिक पत्रिका।
6. चौमासा – आदिवसी लोककला परिषद भोपाल।
7. ट्राइबल टाइम्स – सं. राहुल टेकाम
8. आदिवासी सत्ता – संपादक के.आर. शाह
9. फतेबहादुर सिंह मरकाम – गोंडवाना गाथा 2007, मनीष आफसेट प्रेस सीधी
10. सी. पी. तिवारी – जनजातीय पर्यावरण, पृ. 53